

## सूरह अलक<sup>[1]</sup> - 96

سُورَةُ الْعَلَقِ

### सूरह अलक के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 19 आयतें हैं।

- इस की आयत 2 में इन्सान के अलक अर्थात बंधे हुये रक्त से पैदा किये जाने की चर्चा की गई है। इस लिये इस का यह नाम रखा गया है।<sup>[1]</sup>
- इस की आयत 1 से 5 तक में कुर्आन पढ़ने का निर्देश दिया गया है। तथा बताया गया है कि अल्लाह ने मनुष्य को कैसे पैदा किया और ज्ञान प्रदान किया है?
- इस की आयत 6 से 8 तक इन्सान को चेतावनी दी गयी है कि वह अल्लाह के इन उपकारों का आदर न कर के कैसे उल्लंघन करता है? जब कि उसे फिर अल्लाह ही के पास पहुंचना है?
- आयत 9 से 14 तक उस की निन्दा की गई है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का विरोध करता था और आप की राह में बाधाये उत्पन्न करता था।
- आयत 15 से 18 तक विरोधियों को बुरे परिणाम की चेतावनी दी गई है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और ईमान वालों को निर्देश दिया गया है कि उस की बात न मानो और अल्लाह की वंदना में लगे रहो। हदीस में है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पहले सच्चा सपना देखते थे फिर जिब्रिल आये और आप को यह (पाँच) आयतें पढ़ाईं। (सहीह बुखारी: 4955)

अबू जह्ल ने कहा कि यदि मुहम्मद को काबा के पास नमाज़ पढ़ते देखा तो उस की गर्दन रौंद दूंगा। जब आप को इस की सूचना मिली तो कहा: यदि

1 यह सूरह मक्की है। और इस की प्रथम पाँच आयतें पहली वही (प्रकाशना) है जैसा कि बुखारी (हदीस नं॰ 4953) और मुस्लिम (हदीस नं॰ 160) में आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से उल्लिखित है। इस का दूसरा भाग उस समय उतरा जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को आप के मूर्ति पूजक चचा अबू जह्ल ने "काबा" के पास नमाज़ से रोक दिया। सूरह के अन्त में आप को निर्भय हो कर नमाज़ अदा करने और धमकियों पर ध्यान न देने के लिये कहा गया है।

वह ऐसा करता तो फ़रिश्ते उसे पकड़ लेते। (सहीह बुख़ारी: 4958)

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अपने उस पालनहार के नाम से पढ़ जिस ने पैदा किया
2. जिस ने मनुष्य को रक्त के लोथड़े से पैदा किया।
3. पढ़, और तेरा पालनहार बड़ा दया वाला है।
4. जिस ने लेखनी के द्वारा ज्ञान सिखाया।
5. इन्सान को उस का ज्ञान दिया जिस को वह नहीं जानता था।<sup>[1]</sup>

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ

اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ

- 1 (1-5) इन आयतों में प्रथम वही (प्रकाशना) का वर्णन है।

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से कुछ दूर "जबले नूर" (ज्योति पर्वत) की एक गुफा में जिस का नाम "हिरा" है जाकर एकान्त में अल्लाह को याद किया करते थे। और वहीं कई दिन तक रह जाते थे। एक दिन आप इसी गुफा में थे कि: अकस्मात आप पर प्रथम वही (प्रकाशना) लेकर फ़रिश्ता उतरा। और आप से कहा "पढ़ो"। आप ने कहा, मैं पढ़ना नहीं जानता। इस पर फ़रिश्ते ने आप को अपने सीने से लगाकर दबाया। इसी प्रकार तीन बार किया और आप को पाँच आयतें सुनाई। यह प्रथम प्रकाशना थी। अब आप मुहम्मद पुत्र अब्दुल्लाह से मुहम्मद रसूलुल्लाह हो कर डरते काँपते घर आये। इस समय आप की आयु 40 वर्ष थी। घर आकर कहा कि मुझे चादर उढ़ा दो। जब कुछ शांत हुये तो अपनी पत्नी खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) को पूरी बात सुनाई। उन्होंने ने आप को सांत्वना दी और अपने चचा के पुत्र "वरका बिन नौफल" के पास ले गई जो ईसाई विद्वान थे। उन्होंने ने आप की बात सुन कर कहा: यह वही फ़रिश्ता है जो मुसा (अलैहिस्सलाम) पर उतारा गया था। काश मैं तुम्हारी नुबुव्वत (दूतत्व) के समय शक्ति शाली युवक होता और उस समय तक जीवित रहता जब तुम्हारी जाति तुम्हें मक्के से निकाल देगी। आप ने कहा क्या लोग मुझे निकाल देंगे? वरका ने कहा, कभी ऐसा नहीं हुआ कि जो आप



- |  |  |
|--|--|
| 6. वास्तव में इन्सान सरकशी करता है।                                | كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِكَفٍّ ۖ    |
| 7. इसलिये कि वह स्वयं को निश्चिन्त (धनवान) समझता है।               | أَنْ رَّأَاهُ اسْتَفْتٰی ۖ             |
| 8. निः संदेह फिर तेरे पालनहार की ओर पलट कर जाना है। <sup>[1]</sup> | إِنْ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعٰی ۖ       |
| 9. क्या तुम ने उस को देखा जो रोकता है।                             | أَرَوَيْتَ الَّذِي يَنْهٰی             |
| 10. एक भक्त को जब वह नमाज़ अदा करे।                                | عَبْدًا إِذَا صَلَّى ۖ                 |
| 11. भला देखो तो, यदि वह सीधे मार्ग पर हो।                          | أَرَوَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَىٰ الْهُدٰی  |
| 12. या अल्लाह से डरने का आदेश देता हो?                             | أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوٰی ۖ             |
| 13. और देखो तो, यदि उस ने झुठलाया तथा मुँह फेरा हो? <sup>[2]</sup> | أَرَوَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلٰی ۖ    |
| 14. क्या वह नहीं जानता कि अल्लाह उसे                               | أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرٰی ۖ |

लाये हैं उस से शत्रुता न की गई हो। यदि मैं ने आप का वह समय पाया तो आप की भरपूर सहायता करूँगा।

परन्तु कुछ ही समय गुज़रा था कि बरका का देहान्त हो गया। और वह समय आया जब आप को 13 वर्ष बाद मक्का से निकाल दिया गया। और आप मदीना की ओर हिज़्रत (प्रस्थान) कर गये। (देखिये: इब्ने कसीर)

आयत नं० 1 से 5 तक निर्देश दिया गया है कि अपने पालनहार के नाम से उस के आदेश: कुर्आन का अध्ययन करो जिस ने इन्सान को रक्त के लोथड़े से बनाया। तो जिस ने अपनी शक्ति और दक्षाता से जीता जागता इन्सान बना दिया वह उसे पुनः जीवित कर देने की भी शक्ति रखता है। फिर ज्ञान अर्थात् कुर्आन प्रदान किये जाने की शुभ सूचना दी गई है।

- 1 (6-8) इन आयतों में उन को धिक्कारा है जो धन के अभिमान में अल्लाह की अवज्ञा करते हैं और इस बात से निश्चिन्त हैं कि: एक दिन उन्हें अपने कर्मों का जवाब देने के लिये अल्लाह के पास जाना भी है।
- 2 (9-13) इन आयतों में उन पर धिक्कार है जो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के विरोध पर तुल गये। और इस्लाम और मुसलमानों की राह में रुकावट न डालते और नमाज़ से रोकते हैं।

देख रहा है?

15. निश्चय यदि वह नहीं रुकता तो हम उसे माथे के बल घसीटेंगे।

16. झूठे और पापी माथे के बल।

17. तो वह अपनी सभा को बुला ले।

18. हम भी नरक के फरिश्तों को बुलायेंगे।<sup>[1]</sup>

19. (हे भक्त) कदापि उस की बात न सुनो तथा सज्दा करो और मेरे समीप हो जाओ।<sup>[2]</sup>

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهُ لَنَنْفَعَنَّ النَّاصِيَةَ ۝

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۝

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝

كَلَّا لَا تَطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝

1 (14-18) इन आयतों में सत्य के विरोधी को दुष्परिणाम की चेतावनी है।

2 (19) इस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के माध्यम से साधारण मुसलमानों को निर्देश दिया गया है कि सहन शीलता के साथ किसी धमकी पर ध्यान देते हुये नमाज़ अदा करते रहो ताकि इस के द्वारा तुम अल्लाह के समीप हो जाओ।